ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

कुंकणा जाति और उसकी राम-कथा

डॉ. हेतल जी. चौहाण,
सूरत, गुजरात

कुंकणा, कोंकणी जनजाति भी दक्षिण गुजरात की महत्वपूर्ण जनजाति है । ये लोग महाराष्ट्र के कोंकण प्रांत से गुजरात में आए हैं तथा कोंकण प्रदेश से आए होने के कारण कुंकणा कहलाते है तथा उनकी बोली कुंकणा बोली कहलाती है , जो मराठी से प्रभावित है।

कोंकणा या कुंकणा बोली का लोक साहित्य काफी समृध्द है। मावली, कंसारी इत्यादि लोककथाएँ परंपरागत रूप से प्रचलित हैं । इस बोली की लिपि गुजराती है , पर यह बोली वास्तव में भीली बोली का मराठी संमिश्रित रूप हैं और मराठी शब्दों का प्राचुर्य भी है। चूँकि इस बोली का क्षेत्र महाराष्ट्र से सटा हुआ है । बड़ौदा से ढोल नामक आदिवासी बोलियों की पत्रिका इसी बोली में प्रकाशित होती थी । ढोल पत्रिका ने कुंकणा, भीली व चौधरी बोली के अंक प्रकाशित किए थे । जो बड़े रोचक तथा तथ्यपूर्ण थे। अब ढोल पत्रिका प्रकाशित नहीं होती है।

भगवान राम और उनकी विशेषताओं को प्रकट करने का श्रेय महर्षि वाल्मीकिजी को है, क्योंकि उन्होंने रामायण की रचना की थी। अत: सभी रामचरित्र के रचनाकार उनके ऋणी रहेंगे। उनका आदिकाव्य श्रीमद् वाल्मिकीय रामायण सभी कवियों का उपजीव्य रहा है।

महर्षि वाल्मीकि के रामायण का इतना प्रचार हुआ कि यह रामायण अनेक धर्मों एवं सम्प्रदायों का वर्ण्य-विषय बन गया तथा अनेक भाषाओं में रामायण की रचना होने लगी। इससे आदिवासी समुदाय भी अछूता न रहा। गुजरात की आदिवासी बोलियों में प्रचलित रामकथाओं की बात करें तो उसमें जितना उत्तर गुजरात की भील जनजाति में भीली रामकथाका महत्व है , उतना ही दक्षिण गुजरात की कुंकणा जनजाति की

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

रामकथा है। कुंकणा बोली में रामकथा का बहुत सुंदर तरीके से डांगी आदिवासियों द्वारा गान किया जाता है।

वाल्मीकि रामायण की कथा का प्रारंभ देंखे तो रामकथा की भूलोक में प्रशंसनीय गुणों से युक्त, पराक्रमी, धर्म के रहस्य को जानने वाले कृतज्ञ , सत्यवक्ता, उत्तम चरित्र वाले, तेजस्वी पुरुष कौन है उसे बताने के लिए नारद मुनि वाल्मीकि जी को श्री राम के संबंध में कहते है । जबकि कुंकणा रामकथा के आरम्भ में आता है कि दक्षिण गुजरात का डांग जिला आदिकाल से दंडकारण्य के नाम से जाना जाता है। इस प्रदेश में प्रचलित लोककथा के अनुसार ओपिंगदेव का पुत्र रावण विकलांग था । अत: उसने आत्महत्या करने की सोची और वह शिव -पार्वती के पास पहुँचा। वहाँ उसे शिवजी ने एक कमरे में जाने के लिए मना किया था , क्योंकि उस कमरे में अमृत से भरे घड़े रखे हुए थे। फिर भी वह उस कमरे में गया। चूँकि वह आत्महत्या के लिए पहुँचा था। अनायास ही वह एक घड़े में गिर गया। नतीजा यह हुआ कि उसका शरीर अमृतमय हो गया। अत: उसके दस सर और अठारह हाथ हो गए । कुंकणा रामकथा का आरंभ रावण की दयनीय स्थिति से होता है।

वाल्मीकि रामायण में राज्याभिषेक की जटिलतावाली घटना के मूल में राजा दशरथ की तीन रानियाँ - कौशल्या, सुमित्रा और कैकयी हैं। तो कुंकणा रामकथा में दशरथ की एक मात्र रानी कैकयी है और उसका पुत्र राम है । लक्ष्मण शेषनाग का पुत्र है , जिसे रावण ने राम को मारने के लिए भेजा है पर उसका मन बदल जाता है और वह बाल स्वरूप में प्रकट होता है तथा कौशल्या दोनों को एक साथ पाल -पोष कर बड़ा करती है। कैकयी की मृत्यु के बाद राजा दशरथ कौशल्या से विवाह करते हैं जिस सेवह दो पुत्रों को जन्म देती है - भरत और शत्रुघ्न। वैसे देखा जाए तो कुंकणा रामकथा राजनैतिक कुटिलता के परिणाम स्वरूप असहाय राम की कथा है। यहाँ राम कोई अवतारी पुरुष नहीं बल्कि साधारण मानव मात्र है । वह राजा दशरथ की पहली रानी कैकयी का पुत्र होने के कारण सोतैली माँ की उपेक्षा व त्रास से असहाय है । इतना ही नहीं कौशल्या ने भरत को राजगद्दी मिले उसके लिए राम को वचन से बाँध रखा है। इसी तरह सीता के लिए मत्स्य -वेधन लक्ष्मण करता है, पर वह राजपुत्र न

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

होने के कारण राजपुत्र राम से सीतावरण का आदेश मिलता है और इस तरह सीता राम को वरमाला पहनाती है।

कुंकणा रामकथा में देव और मनुष्य एक ही कोटि में आते हैं। इस बात का पता तब चलता है जब नारणदेव (श्रीकृष्ण) रावण से पार्वती को मुक्त करने के लिए कपट रचते हैं। नारणदेव रावण से कहते हैं कि महादेव को मैंने एक टोकरी भर के केकड़े और एक घड़ा भरकर सुरा बीमार भेंस के बदले में दी थी । यहाँ सभी लोग मनुष्योचित व्यवहार करते हैं। कहने का मतलब यह है कि देव और मनुष्य एक जैसे हैं इनके बीच कोई फर्क नहीं है। इतना ही नहीं कुंकणा रामकथा में रावण पार्वती और महादेव को वचनबद्ध करके लंका ले जाने का प्रयास करता है । उस वक्त नारणदेव (श्री कृष्ण) मेढ़की से नकली मंडल धारिणी पार्वती बनाकर असली पार्वती को मुक्त करने के लिए जाते हैं, तब वे मानव सहज धमकी देते हुए कहते हैं कि मैं जब तक वापस नहीं आता हूँ तब तक कोई अपना स्थान नहीं छोड़ेगा , अन्यथा सबकी चमड़ी उधेड़ डालूँगा।

गौतम ऋषि ने सभा की प्रदक्षिणा करके अहल्या को प्राप्त कर लिया । यह बात सूर्यदेव को उचित नहीं लगी , अत: वह गौतम ऋषि का रूप धारण कर अहल्या के साथ अनैतिक सम्बन्ध बांधते है। परिणाम स्वरूप अंजनी का जन्म हुआ और अंजनी के गर्भ से हनुमान का जन्म हुआ।

वाल्मीकि रामायण और कुंकणा रामकथा में सीता जन्म की कथा में समानता यह है कि सीता धरती से बाल स्वरूप में प्राप्त होती है । वाल्मीकि रामायण में जब जनक राजा यज्ञ के लिए खेत जोत रहे थे तब उन्हें सीता प्राप्त हुई थी, कुंकणा रामकथा में श्रीकृष्ण जब असली पार्वती को रावण से प्राप्त करने के लिए नकली पार्वती का सर्जन करते हैं तब नकली पार्वती के सौंदर्य को देखने से महादेव का स्खलन हो जाता है। जिससे मंडल धारिणी गर्भवती होती है । उसका गर्भ पानगंगा में स्त्रवित होता है जो कि बाद में जांबुमाली को बाग में मिलता है। इस प्रकार कुंकणा कथा में

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

सीता महादेव की पुत्री है । जब सीता बड़ी हुई तब जनक राजा उसे अपने पास ले आये।

वाल्मिक रामायण सूर्पनखा वनवासी राम और लक्ष्मण के रूप से मोहित होकर उनको उनको अपनी ओर आकर्षित करती है। इस बात से गुस्सा होकर लक्ष्मण उसका नाक काट लेता है। अपनी नाककटी बहन के अपमान का बदला लेने के लिए रावण सीता का हरण करता है। जबकि कुंकणा रामकथा के अनुसार लक्ष्मण से अनजाने में वन में तप करने वाली सुभनखा के पुत्र का वध हो जाता है । सुभनखा उसका प्रतिशोध लेने के लिए लक्ष्मण पर हमला करती है। नाककटी हुई बहन का बदला लेने के लिए रावण ने मोर बनकर सीता का हरण किया । रावण को अपनी मृत्यु राम के द्वारा होनेवाली है इस बात का पता था। अत: वह राजा दशरथ को मार डालने का षड्यंत्र रचता है। रावण राजा दशरथ को राजकाज सीखने के बहाने अपने पास बुलाता है और उन्हें कैद में डाल देता है। देवों को इस बात कीचिंता होती है , इसलिए वे राजा दशरथ को रावण की कैद से मुक्त करवाते हैं।

वाल्मिकि रामयण और कुंकणा रामकथा में हनुमान और राम -लक्ष्मण की भेट में थोड़ी साम्यता है। उनकी भेट जब सीताहरण के बाद राम -लक्ष्मण उसको ढूंढने लिए वन में भटकते है तब होती है, कुंकणा रामकथा में हनुमान और राम-लक्ष्मण की भेट तब होती है जब सीताहरण के बाद उसको ढूंढने लिए वन में भटकते है । उस समय हनुमान राम-लक्ष्मण की कसौटी करने के लिए एक स्त्री का हरण करते हैं , लक्ष्मण उसे बचाने के लिए तैयार हो जाता है, सीताहरण से दुखी राम अपहृत स्त्री को बचाने को तत्पर नहीं होते हैं।

वाल्मीकि रामायण में सीता त्याग की बात करें तो लोकापवाद के कारण राम सीता का त्याग करते है। गृहत्यागी सीता वाल्मीकि जी के आश्रम में रहती है। वहाँ वह लव और कुश नाम के दो जुड़वा बच्चों को जन्म देती है। जबकि कुंकणा रामकथा में सौतेली माँ कौशल्याके द्वारा राम को सीता रावण के पास रहकर आई है, यह कहकर राम से गर्भवती सीता का त्याग करवाती है। गृहत्यागी सीता वामळक ऋषि के

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

आश्रम में बच्चे को जन्म देती है। वामळक ऋषि अंध होने के कारण सीता को अपने बच्चे की चिंता होती है और वह बच्चे को साथ लेकर वहाँ से चली जाती है। चूँकि सीता ऋषि को बिना बताए बच्चे को ले गई थी अत : ऋषि को बच्चे की चिंता हुई और उन्होंने अपने तपोबल से लहू नामक घास से बच्चे को उत्पन्न किया। इस प्रकार लव और कुश दोनों बच्चे बड़े होते हैं।

इस तरह कुंकणा रामकथा भी वाल्मीकि रामायण की तरह करुणाजनक वेदना की कथा है। इसलिए शायद कुंकणा रामकथा आदिवासियों की एक महत्त्वपूर्ण रामकथा है।

कहा जाता है कि भाषा तथा मानव सभ्यता एवं स्थानीय सामजिक सभ्यता का साहित्य पर असर पड़ता है इस दृष्टी से कुंकणा रामकथा पर नज़र डालते है तो डांग के भील राजा बहुत गरीब थे। वे नाम के राजा थे। अत : उनकी कथाओं में सामान्य मनुष्य के समान दरिद्रता का वर्णन मिलता है। इस बात का प्रभाव कुंकणा रामकथा पर भी देखा जा सकता है। कुंकणा रामकथा में उनकी अपनी संस्कृति के अनुरूप आचार-विचार व्यक्त हुए हैं। यद्यपि इस रामकथा का अर्थघटन करते वक्त डांगी आदिवासी संस्कृति को समझना हमारे जरुरी बन जाता है अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाएगा।

संदर्भ सूचि :

i. दक्षिण गुजरात की जनजातिय बोलियाँ उद्भव और विकास , डॉ. मधुकर पाडवी, जगत भारती प्रकाशन, इलाहाबाद.
ii. वाल्मीकि रामायण, गोरखपुर प्रकाशन।